Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

निशा भार्गव के साहित्य में राजनीतिक एवं सामाजिक हास्य व्यंग का अध्ययन

Mamatha Sharma*

MA, Hindi, B.Ed., Net Qualified

सारांश – *मानव ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति अथवा सृष्टि का मुकुट माना जाता है। मनुष्य के पास मन, बुद्धि और संवेदनाएँ हैं जो उसे अन्य जीवों से श्रेष्ठ बनाती है। उसके पास चिन्तन-मनन करने की शक्ति है, जिससे वह सही-गलत व अच्छे -बुरे की पहचान करता है। इन शक्तियों के परिणामस्वरूप मनुष्य समाज तथा सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करता है। भीड़ समाज नही है, जहाँ पारस्परिक हितों का चिन्तन होता है, वह समाज है। समाज में सबके हितों का दीर्घकालीन चिन्तन छिपा होता है। जब यह चिन्तन समाप्त हो जाता है, तो समाज विकृत हो जाता है। समाज में ये विकृतियाँ और विसंगतियाँ मानव जीवन के साथ-साथ पनपती रहती हैं। ये विसंगतियाँ और विद्रूपताएँ सामाजिक जीवन के सजग व्यक्ति को अन्दर ही अन्दर कचोटती रहती हैं, जिससे वह आक्रोश और तिक्तता से भर जाता है। इसी का परिणाम व्यंग्य है। विश्व काव्य में व्यंग्य की एक दीर्घ परम्परा रही है परन्तु बहुत दिनों तक इसे हास्य का ही एक अंग-अंग समझा जाता रहा। यह सर्वविदित सत्य है कि मानव जीवन में हास्य का विशिष्ट स्थान है। जातीय सजीवता के साथ-साथ यह सुधार का माध्यम भी है। मनुष्य अपनी प्रारम्भिक अवस्था में चाहे झुण्ड मे रहा हो, चाहे आज के वैज्ञानिक युग के विकसित समाज में, जीवन की विसंगतियाँ और विडम्बनाएँ उसे चुभती रही हैं। इस शोध में हम निशा भार्गव के साहित्य कार्यों में राजनितिक एवं सामाजिक हास्य व्यंगों का अध्ययन करेंगे।*

----------X----------

प्रस्तावना

यदि समाज में विसंगतियाँ, विद्रूपताएँ एवम् विकृतियाँ होगीं तो अवश्य ही व्यंग्य का जन्म होगा। यदि हम गौर करें तो पाते हैं कि करीब-करीब हर व्यक्ति व्यंग्यकार हो सकता है। एक स्कूल का विद्यार्थी जो अपने शिक्षक के बारे में रुखे शब्दों का प्रयोग करता है, एक मसखरा जो टी.वीपर शीर्ष नेताओं की नकल करता है, हम और आप जब एक साथ बैठकर संसार की धूर्तता और राजनीतिज्ञों की मुर्खता आदि पर बहस करते हैं, तो वह भी व्यंग्य का ही रुप है। साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यकार अपने सारस्वत कार्य की प्रेरणा और ऊर्जा समाज से ही प्राप्त करता है। आज जीवन और समाज से बाहर वास्तविक साहित्य की न कोई स्थिति, कोई गतिविधि रही और न रह सकती है। समकालीन साहित्य जीवन को झरोखे से न देखकर ठोस धरती और जनजीवन पर दृष्टिपात करता है। आज का साहित्यकार अपनी रचना के केन्द्र में आम आदमी को प्रतिष्ठित कर उसके सुख-दुख, आशा-आकाँक्षा, संघर्ष-पीड़ा और स्वप्नों को वाणी प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में प्रतिबद्ध साहित्यकार की रचना जीवन की आलोचना है। जीवन की इस आलोचना के लिए वह व्यंग्य का सहारा लेता है। व्यंग्य के साथ हास्य का समावेश उसके उद्देश्य को विस्तृतता प्रदान करता है। आज हास्य और व्यंग्य एक-दूसरे के पूरक हैं। हास्य-व्यंग्य के संबंधो को जानने से पूर्व हास्य और व्यंग्य को जान लेना आवश्यक है।

व्यंग्य: स्वरुप और अभिप्राय

मानव जीवन द्वन्द्वात्मक है और द्वन्द्व का स्त्रोत है - मानव प्रकृति जिसमे सुमति व कुमति है। सुमति से संस्कृति का विकास होता है तों कुमति से विकृति का। व्यंग्य सुमति के हाथ का अंकुश है जो कुमति के उद्दण्ड विकारों पर प्रहार करके उन्हे सन्मार्ग पर लाता है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव जीवन में दो स्थितियों पर मंथन होता रहा है, 'क्या हो रहा है' और 'क्या होना चाहिए था।' एक वर्ग वो है जो 'जो हो रहा है' को स्वीकार कर अपनी नियति मान संतोष कर लेता है। तो दूसरी ओर वह वर्ग है जो 'जो होना चाहिए था वही होना चाहिए' को स्वीकारता है। इसी प्रकार के व्यक्ति ही समाज -सुधार लाना चाहते हैं और व्यंग्य उनके लिए अस्त्र के रूप में कार्य करता है।

www.ignited.in

व्यंग्य: प्रयोग का इतिहास

व्यंग्य शब्द का प्रयोग भारतीय सहित्य में बहुत पुराने जमाने से होता आया है। शब्द-शक्तियों के विषय में व्यवस्था देते हुए शास्त्रकार पण्डितों ने व्यंजना शक्ति का काफी विस्तार से विवेचन किया है। 'साहित्यदर्पणकार' के अनुसार (पद जिस 'अनन्वित-एकार्थ के बोधक हुआ करते हैं, वह) अर्थ तीन प्रकार का होता है-वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ। इन त्रिविध अर्थों का निरुपण इस प्रकार किया गया है कि वाच्यार्थ वह है जो अभिधा शक्ति द्वारा प्रतिपादित किया जाता है, लक्ष्यार्थ वह जो लक्षणा शक्ति द्वारा बोधित होता है और 'व्यंग्य' अर्थ उसे कहते हैं जो व्यंजना-शक्ति द्वारा अवगत किया जाता है और इस प्रकार शब्द-शक्तियाँ तीन हुआ करती हैं। पण्डित राज जगन्नाथ के 'अर्थ व्यजंकता का उन्मेष' अथवा कुमारिल भट्ट की 'तात्पर्यवृत्ति का परिवेश' इन सभी के मूल में अभिधामूलक अर्थ से भिन्न जिस तत्व का संकेत है वह 'व्यंग्यार्थ' ही है। वक्रोक्ति सम्प्रदाय के आचार्य तो कहीं-कहीं 'परिहासपूर्ण - संभाषण के अर्थ में ही 'वक्रोक्ति' का प्रयोग करते हैं। भोजदेव समस्त वाड्.मय को वक्रोक्ति, रसोक्ति व स्वभावोक्ति इन तीन रूपो में वर्गीकृत करते हैं। रसोक्ति यदि साहित्य की सौन्दर्य -भावना से सम्बद्ध है तो वक्रोक्ति में समूची व्यंग्यपरकता रूपायित होती है। इस प्रकार समूचे संस्कृत-साहित्य में वर्णित तीन काव्य- शक्तियों मे से 'व्यंग्यार्थ' तथा वक्रोक्ति के विवेचन में व्यंग्य की सत्ता के अस्तित्व को स्वीकारा जा सकता है परन्तु यह कहना आवश्यक है कि आधुनिक व्यंग्य के स्वरुप में संस्कृत की 'व्यजंना' शक्ति के साथ अंग्रेजी 'सेटायर' का अर्थ एवम् उद्देश्य भी समाहित किए गए हैं। आज का व्यंग्य पारम्परिक चुहल अथवा परिहास मात्र न होकर एक गम्भीर एवम् साहित्यिक कर्म है। यह व्यापक अर्थ-बोध लिए है। आज यह शब्द-शक्तियों तक सीमित न रहकर एक स्वतन्त्र साहित्य विधा के रूप में विकसित हो गया है। 'भारतेन्दु युग' से लेकर अपनी विकास यात्रा में व्यंग्य कविता और निबंधों से निकलकर कहानियों उपन्यासों ओर नाटकों में भी पूरी तरह व्याप्त दृष्टिगोचर होता है। व्यंग्य का सुगठित स्वरूप हमे भारतेन्दु युग में देखने को मिलता है। हिन्दी गद्य विकास के साथ-साथ व्यंग्य विधा का विकास भी उत्तरोत्तर होता गया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा उनके मण्डल के अन्य रचनाकारों ने गद्य मे व्यंग्य का प्रयोग कर व्यंग्य को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया। बालमुकुन्द गुप्त द्वारा रचित 'शिवशम्भु के चिट्ठे' में व्यंग्य का जो स्वरुप मिलता है वह पाठकों को भाव-विभोर कर देता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'अन्धेर-नगरी' व्यंग्य की उत्कृष्ट एवम् कालजयी रचना है। व्यंग्य के उदाहरण हमे भक्ति और रीतिकाल में भी दिखाई देते हैं। व्यंग्य का जैसा तीखापन हमे कबीर के साहित्य में मिलता है वह बेजोड़ है। व्यंग्य समाज की विकृत स्थितियों की जितनी मर्मस्पर्शिता से प्रकट करता है, उतनी साहित्य की अन्य कोई विधा नही कर पाती। व्यंग्य की लोकप्रियता आज दिनोंदिन बढ़ रही है।

राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियों से सम्बन्धित व्यंग्य

इसमे व्यंग्यकार किसी व्यक्ति विशेष पर व्यंग्य नही करता अपितु उन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक परिस्थितियों पर व्यंग्य करता है जो किसी एक व्यक्ति द्वारा नही अपितु सम्पूर्ण परिवेश के लोगों द्वारा मिलकर पैदा की जाती हैं। ये परिस्थितियाँ धीरे-धीरे विकराल रूप ग्रहण करती जाती हैं जिनके कारण आम आदमी का जीवन अत्यधिक संघर्षमय बन जाता है। यह उन मानवीय प्रवृत्तियों पर किया जाता है जो मानवीय होते हुए भी पाशविक होती हैं।

सामाजिक व्यंग्यः-

सामाजिक व्यंग्य के अन्तर्गत सम्पूर्ण समाज की विद्रूपताएँ, विसंगतियाँ, विडम्बनाएँ आती हैं। इन विसंगतियों का दायित्व किसी व्यक्ति विोष पर न होकर सम्पूर्ण समाज पर होता है। समाज का हर वर्ग आज अपना जीवन यापन अत्यन्त संघर्षमय स्थिति में कर रहा है। सामाजिक अव्यवस्थाएँ, कानून, पुलिस व्यवस्था, महँगाई, बेरोजगारी, गरीबी आदि के कारण समाज में विसगंतियाँ तीव्र गति से बढ़ रही हैं, जिनके कारण आए दिन समाज में कोई न कोई दुर्घटना घटित होती रहती है। इन्हीं सामाजिक विसगंतियों अथवा अव्यवस्थाओं पर प्रहारात्मक अभिव्यक्ति सामाजिक व्यंग्यकार का उद्देश्य होता है। उसके व्यंग्य के केन्द्र में एक व्यक्ति न होकर सम्पूर्ण समुदाय होता है। आज सभी कार्यालयों में रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार का बोलबाला है। समाज में अव्यवस्थाएँ भरी पड़ी है, आम आदमी का जीवन अत्यन्त कठिनाईयों से भरा पड़ा है। व्यंग्यकार बड़ी निर्ममता से सामाजिक विद्रूपताओं की बखियाँ उधेड़कर रख देता है जबकि उसका लक्ष्य समाज-सुधार होता है, इसी कारण वह विद्रोहात्मक स्वर में विसंगतियों पर निरन्तर प्रहार करता है। इस प्रकार का व्यंग्य पाठक वर्ग के ज़हन में भी कई सवाल पैदा करता है जिन पर वह चिन्तन-मनन करता है और एक समाधान की ओर अग्रसर होता है। अतः सामाजिक व्यंग्य जर्जर होते समाज को फिर से खड़ा करने मे अपना सहयोग देता है।

राजनीतिक व्यंग्य

कई व्यंग्यकारों ने तत्कालीन विभिन्न नेताओं को भी अपने व्यंग्य का निशाना बनाया, जिनमे इन्दिरा गांधी, जवाहर लाल

www.ignited.in

नेहरू आदि उल्लेखनीय है। राजनैतिक व्यंग्य के विषय में प्रो. सदरलैण्ड के विचार हैं कि, "राजनीतिक व्यंग्यकार सरलता से अपना उददेश्य पूरा कर लेता है क्योंकि जनता में राजनैतिक व्यंग्य के प्रति पहले से ही आकर्षण विद्यमान रहता है। जनता में पहले से ही राजनीति की असगंतियों के प्रति आक्रोश के भाव विद्यमान रहते हैं और यदि व्यंग्यकार इन्हीं असंगतियों पर चोट करता है तों तुरन्त उसे आशाजनक तथा अनुकूल प्रतिक्रिया जनता से प्राप्त हो जाती है।" व्यंग्यकार इन राजनीतिक विसंगतियों का भोगी भी होता है और द्रष्टा भी, इसीलिए उसके व्यंग्य में सच्चाई और ईमानदारी निहित होती है। जिसे पढ़कर या सुनकर जनता को ऐसा प्रतीत होता है कि व्यंग्यकार उसके मुँह की बात ही काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहा है।

निशा भार्गव

साहित्य और जीवन का अत्यन्त गहरा सम्बन्ध रहा है। जीवन और समाज से बाहर न साहित्य लिखा जा सकता है और न ही इसकी कल्पना की जा सकती है। यह जीवन का शास्त्र है, जिसमे कल्पना के रंग तो हैं ही साथ ही भोगे हुए यर्थाथ के ढंग भी सम्मिलित हैं। एक समय था जब साहित्य हमे कल्पना लोक में बाँधे रखता था और राज-प्रशंसा, नायिका-भेद वर्णन, भक्ति आदि इसके उद्देश्य हुआ करते थे, परन्तु आज साहित्य इन सबसे कंइं ऊपर उठ चुका है। आज साहित्य जीवन की आलोचना है। कल्पना के लोक में कोई कब तक विचरण कर सकता है, एक न एक दिन उसे ठोस धरातल पर आना ही होता है। यह धरातल कहीं सपाट-समतल है तो कहीं खड्डों से भरा है। अतः यही वह दुनिया है जहाँ रहना और जीवन जीना हमारी नियति बन गई है। यह दुनिया विसंगतियों से भरी पड़ी है क्योंकि समाज मे हर तबके के लोग रहते हैं। यहाँ वे लोग भी हैं, जो भ्रष्टाचार, दुराचार आदि असामाजिक क्रियाएँ करते हैं और वे लोग भी हैं जो इन असामाजिक क्रियाओं का शिकार होते हैं। ऐसे में समाज के लोगों को इन असामाजिक क्रियाओं से परिचित करवाना और समाज को सुधारने का सारा दारोमदार साहित्यकार पर होता है। साहित्य की अन्य विधाओं में से 'हास्य- व्यंग्य'इस उद्देश्य का निर्वहन भली-भाँति करता है। अपने युग का सत्य कहने का सामथ्र्य बहुत कम रचनाकारों में होता है। समाज में ऐसे रचनाकार प्रायः अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रिय हो जाते हैं, जिनकी रचनाओं में सहजता, आनन्द, सम्प्रेषणीयता के साथ -साथ विनोदपूर्ण संवेदनशीलता और उदात्तता जैसे गुण विद्यमान हों। 'हास्य-व्यंग्य' पूर्ण कविताएँ इसी श्रेणी में आती हैं। कवयित्री निशा भार्गव की कविताएँ संस्कृति का साहचर्य लेकर भ्रष्टाचार के विरूद्ध उद्घोष करती हैं। उन्होंने बड़े चुटीले अदांज़ में बड़ी से बड़ी सामाजिक विसंगति को हमारे समक्ष रख दिया। यह सर्वविदित है कि हिन्दी साहित्य में व्यंग्य कविता ने अपनी उड़ान दूर-दूर तक भरी है। कबीर, भारतेन्दु, निराला, नागार्जुन, परसाई, श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, गोपाल चतुर्वेदी के बाद की पीढ़ी तक गद्य और पद्य में व्यंग्य की समृद्धि चर्चा का विषय रही है। डॉ. शेरगंज गर्गने कहा है कि "हिन्दी की आधुनिक महिला रचनाकारों ने भी व्यंग्य की भंगिमा को बड़ी तेजी से अपनाया है।

निशा भार्गव के साहित्य में सामाजिक हास्य-व्यंग्य

साहित्य समाज का दर्पण है। जिस प्रकार साहित्य समाज पर आधारित है, उसी प्रकार साहित्य समाज का मार्गदर्शन भी करता है। प्राणी की सबसे बड़ी उपलब्धि समाज है तथा प्राणी के सामुहिक जीवन का प्रतीक भी समाज है। समाज की रचना मनुष्य द्वारा ही हुई है लेकिन बिना समाज के उसका जीवन अधूरा है। इस सम्बन्ध में अरस्तु ने भी कहा है कि वह मनुष्य जो समाज में नही रह सकता या जिसकी कोई अपनी आवश्यकता नही है क्योंकि वह स्वयं में पूर्ण है, अवश्य ही या तो पशु है या फिर देवता। समाज व्यक्तियों का एक समूह है। समाज कोई मूत्र्त वस्तु नही है बल्कि अमूत्र्त है। समाज के बारे में श्री रयूटर महोदय ने लिखा भी है -"जिस तरह जीवन वस्तु नही है बल्कि रहने की प्रक्रिया है उसी तरह समाज भी एक वस्तु नही है बल्कि सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया है"1 समाज के इसी व्यवस्थित रूप की चर्चा करते हुए सर्वश्री मैकाइवर एवम् पेज ने लिखा -"समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है।"2 समाज के इन्हीं सम्बन्धों में मनुष्य आस्था और अनास्था के जाल में फँसा हुआ है। अनास्था के आघात से सामान्य मनुष्य का आत्म विश्वास चोटिल हो रहा है, जिससे वह निरन्तर बेचैन रहता है और परिवर्तन के लिए छटपटाता रहता है जिससे सामाजिक विसंगतियों व विद्रूपताओं का आरम्भ होता है। सामाजिक हास्य-व्यंग्यकार इन्ही विसंगतियों व विद्रूपताओं पर आघात करता है जो समाज से जुड़ी हुई हैं। सामाजिक हास्य-व्यंग्य में हास्य व्यंग्यकार किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना न करके उन सामाजिक परिस्थितियों की विडम्बनाओं पर प्रहार करता है जो मनुष्य द्वारा ही पैदा की गई है तथा जिसके लिए व्यक्ति विशेष को उत्तरदायी नही ठहराया जा सकता। सामाजिक हास्य -व्यंग्य का लक्ष्य उन सभी विसंगतियों पर प्रहार करना है जो जन सामान्य का जीवन कष्टों और यातनाओं से भर देती हैं। अनैतिकता, विकृत जीवन मूल्य, पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण, राष्ट्रीय नियमों व सिद्धान्तों की अवहेलना, शहरी संस्कृति का विकृत रूप, सामाजिक जातिगत विषमता, उदात्त एवं आदर्श के स्थान पर धन का महत्व, जैसी अनेक स्थितियों पर विनोदपूर्ण व्यंग्य प्रहार किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसी मानवीय प्रवृत्तियों

www.ignited.in

पर प्रहार किया जाता है जो अमानवीय होती हैं। समाज में प्रचलित सड़ी-गली रूढ़ियों और अंधविश्वासों की एक गहरी खाई बन चुकी है। आम आदमी इन रूढ़ियों व अंधविश्वासों से त्रस्त है। इन अंधविश्वासों की आड़ में इस देश के शासक वर्ग अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं और समाज को कमजोर और पंगु बनाते हैं। "सामाजिक स्तरीकरण के फलस्वरूप सामाजिक असमानता देखने को मिलती है क्योंकि समाज में मान, आदर, पद-प्रतिष्ठा, आर्थिक अवसर आदि असमान ढंग से वितरीत रहते हैं।'

निशा भार्गव के साहित्य में राजनीतिक हास्य-व्यंग्य

नागरिक स्तर पर या व्यक्तिगत स्तर पर कोई विशेष प्रकार का सिद्धान्त एवम् व्यवहार राजनीति (पॉलिटिक्स) कहलाती है। दूसरे शब्दों में राजनीति अर्थात् राज्य की नीति। 'राज्य' उस संगठित ईकाई को कहते है जो एक शासन (सरकार) के अधीन हो। राज्य सप्रंभुतासम्पन्न हो सकते हैं। इसके अलावा किसी शासकीय इकाई या उसके किसी प्रभाग को भी राज्य कहते हैं। इस प्रकार 'राजनीति' का अर्थ है किसी शासकीय इकाई को सुचारू रूप से चलाने के लिए नीतियों का निर्माण करना एवं सफलतापूर्वक उनका क्रियान्वयन करना परन्तु आज तो राजनीति का अर्थ ही बदल गया है। आज नीति का राज न होकर' राज की नीति है या कहा जा सकता है कि किसी भी तरीके से राज हथियाने की नीति है। अधिक संकीर्ण रूप से कहें तो शासन मे पद प्राप्त करना तथा सरकारी पद का उपयोग करना ही राजनीति है। आज के नेताओं का व शासकों का राजनीति के प्रति दृष्टिकोण ही बदल गया है।

अतः राजनीति मनुष्य के अस्तित्व की अटल सच्चाई है। चाहे समाज का कोई वर्ग राजनीति को पसंद करता हो या न करता हो परन्तु समाज का प्रत्येक वर्ग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति से जुड़ा हुआ है। आज राजनीति को कुनीति या कपट वाली राजनीति कहा जाए तो कोई गलत नही होगा। हिन्दी साहित्य में राजनीति का वर्णन कोई नई बात नही है।

कवयित्री निशा भार्गव कहती हैं कि मनुष्य को आशावादी होना चाहिए क्योंकि आशावादी होना अच्छा होता है किन्तु हमारा आज हमे निराशावादी बनाता है क्योंकि राजनीतिक परिस्थितियों ने आज हमारे जीवन के हर पहलु को प्रभावित किया है। आज की परिस्थितियों को मद्देनज़र रखते हुए इसके बाद क्या होगा और कैसी परिस्थिति जन्मेंगी, इसी विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होनें 'भविष्य' कविता में लिखा है कि चहुँ ओर विद्रूपताओं, विसंगतियों का बोलबाला है और राजनीति का तो बुरा ही हाल है। आज की परिस्थितियों को देखकर लगता है कि आने वाले दिनो में देश-प्रेम, बलिदान, स्वामिभक्ति और आत्मज्ञान तो लगभग समाप्तप्रायः हो जाएँगे। वर्तमान को देखते हुए भविष्य का अनुमान लगाया जा सकता है। निशा जी कहती हैं कि आंतकवाद और अत्याचार निरन्तर फलते-फूलते रहेंगे तथा जनता की पीड़ा दिनोंदिन बढ़ती रहेगी। नेताओं की राजनैतिक महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए युद्ध होंगे। नेताओं के अनैतिक कर्मों मे निरन्तर बढ़ोतरी होगी और इसके लिए यदि उन्हें जेल भी जाना पड़ा तो जेल को फाइवस्टार बना दिया जाएगा। यदि नेताओं से मिलने कोई जाना भी चाहेगा तो उनके लिए तीन दिन व दो रातों का फ्री पैकेज दिया जायेगा। निशा जी की दृष्टि मे काल को भेदकर देखने का सामर्थ्य है।यह कवयित्री की काव्यगत क्षमता को ही प्रकट करती है कि वे वर्तमान को भेदकर भविष्य तक जा पहुँची। ऐसी हास्य-व्यंग्य पूर्ण कविताएँ आज के समय में दुर्लभ हैं। उनमे निशा जी की कविताएँ अत्यन्त दुर्लभ है। वे इस बात को भली भाँति जानती हैं कि आज के युग में जन सामान्य के भविष्य का फैसला राजनीति ही करती है। आज राजनीति से न तो दूर जाया जा सकता है और न ही उसे छोड़ा जा सकता है। आम जनता के जनजीवन से जुड़ी उनकी कविताओं में राजनीतिक व्यंग्य यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। भारतीय राजनीति का इतना पतन हो चुका है कि यह अमानवीयता की सीमा तक पहुँच गई है। इस पतन के लिए निशा जी हमारे नेताओं को ही जिम्मेदार ठहराती है। अपने हास्य-व्यंग्य से वे छल, कपट और धोखाधड़ी करने वाले नेताओं के वास्तविक स्वरूप को उघाड़कर रख देती हैं। नेता गरीबों का शोषण करते हैं, उन पर अत्याचार करते हैं, उनकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं करते, फिर भी कवयित्री उम्मीद नही छोड़ती। वे नाउम्मीदी में भी आशा की किरण ढूढँती हैं।

निष्कर्ष

साहित्य और जीवन का अत्यन्त गहरा सम्बन्ध रहा है। जीवन और समाज से बाहर न साहित्य लिखा जा सकता है और न ही इसकी कल्पना की जा सकती है। यह जीवन का शास्त्र है, जिसमें कल्पना के रंग तो हैं ही साथ ही भोगे हुए यर्थाथ के ढंग भी सम्मिलित हैं। आज साहित्य जीवन की आलोचना है और इसी तथ्य को सत्य सिद्ध कर दिखाया है। कवयित्री निशा भार्गव जी ने। जीवन की आपाधापी व संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में हँसने-मुस्कुराने के बिन्दु खोज निकालना तथा पीड़ा व दर्द के प्रसंगो को हँसते हुए सकारात्मक सोच की ओर ले जाना ही उनकी कविताओं का उद्देश्य है। निशा जी ने समाज की विसंगतियों पर केवल प्रकाश ही नहीं डाला बल्कि उन्हें मथकर उनके शुद्धिकरण हेतु समाधान भी प्रस्तुत किया।'निशा भार्गव के साहित्य में हास्य-व्यंग्य' प्रस्तुत शोधकार्य का विषय है, जिसमे उनके साहित्य को हास्य-व्यंग्य की पृष्ठभूमि पर आँका गया है। विषय के परिसीमन व अध्ययन के महत्व को ध्यान में रखते हुए आलोच्य विषय के सम्पूर्ण तथ्यों को समूपस्थित

www.ignited.in

करने का प्रयास किया गया है। हास्य-व्यंग्यकार निशा भार्गव जी 'उधार की मुस्कान', 'चिकने घड़े', 'बंटाधार', 'घनचक्कर', आदि रचनाओं के प्रकाशन से आधुनिक युग के व्यंग्यकारों में एक सम्मानित हस्ताक्षर के रूप में प्रतिष्ठित हैं। कवयित्री का कार्य किसी उपदेशक की भाँति न होकर एक चिकित्सक की भाँति है जो समाज के विकारों का निदान भी करती हैं व उपचार भी। यह तथ्य सत्य है कि समाज के निर्माण व विकास में एक लेखक की सक्रिय भूमिका होती है और इस दायित्वपूर्ति में कवयित्री निशा भार्गव जी मृत्युंजय होकर काल प्रवाह पर अपने पद चिह्नों की छाप छोड़ती परिलक्षित होती हैं। वर्तमान युग में आम आदमी के संघर्ष व पीड़ा को तथा उससे सम्बन्धित रोज़मर्रा के विषय को बहुत कम व्यंग्यकारों ने उठाया है और जिन्होंने उठाया है उनमे निशा भार्गव जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में निशा भार्गव जी के साहित्य में हास्य-व्यंग्य को सुविधा हेतु सामाजिक, राजनीतिक मूल्यों पर हास्य-व्यंग्य के अंतर्गत अध्ययन किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. निशा भार्गव: 'उधार की मुस्कान', मेधा बुक्स, एक्स-11, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032, द्वितीय संस्करण, सन् 2004।
2. निशा भार्गव: 'अच्छे फँसे', मेधा बुक्स, एक्स-11, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032, द्वितिय संस्करण, सन् 2005।
3. निशा भार्गव: 'बंटाधार', अमरसत्य प्रकाशन, प्रीत विहार, दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण, सन् 2010।
4. नशा भार्गव: 'मेरी सरस कविताएँ', सुरभि प्रकाशन, सी-37, ग्राउंड फलोर (ब्लॉक-सी), गणेशनगर, पांडवनगर काम्प्लेक्स, दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण, सन् 2012।
5. निशा भार्गव: 'तिनके-तिनके', वंदना बुक एजेंसी, प्रीत विहार, ग्राउंड फलोर, 109 ब्लॉक-सी, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 2012।
6. निशा भार्गव: 'बसन्त बयार', सुरभि प्रकाशन, सी-37, ग्राउंड फलोर (ब्लॉक-सी), गणेशनगर, पांडवनगर कॉम्पलैक्स, दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण, सन् 2012।
7. डॉ. रश्मि मल्होत्रा, अनकहे पल।
8. उर्मिल गम्भीर, प्रतापनारायण श्रीवास्तव के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 1972।
9. डॉ. ए. एन. चन्द्रशेखर रेड्डी, हिन्दी व्यंग्य साहित्य, शबरी संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 1989।
10. एस. एस. पाण्डेय, समाजशास्त्र, मैकग्रा हिल एजुकेशन, इन्डिया, संस्करण सन् 1962।

Corresponding Author

Mamatha Sharma*

MA, Hindi, B.Ed., Net Qualified